चाणक्य नीति
एवं
कौटिल्य अर्थशास्त्र

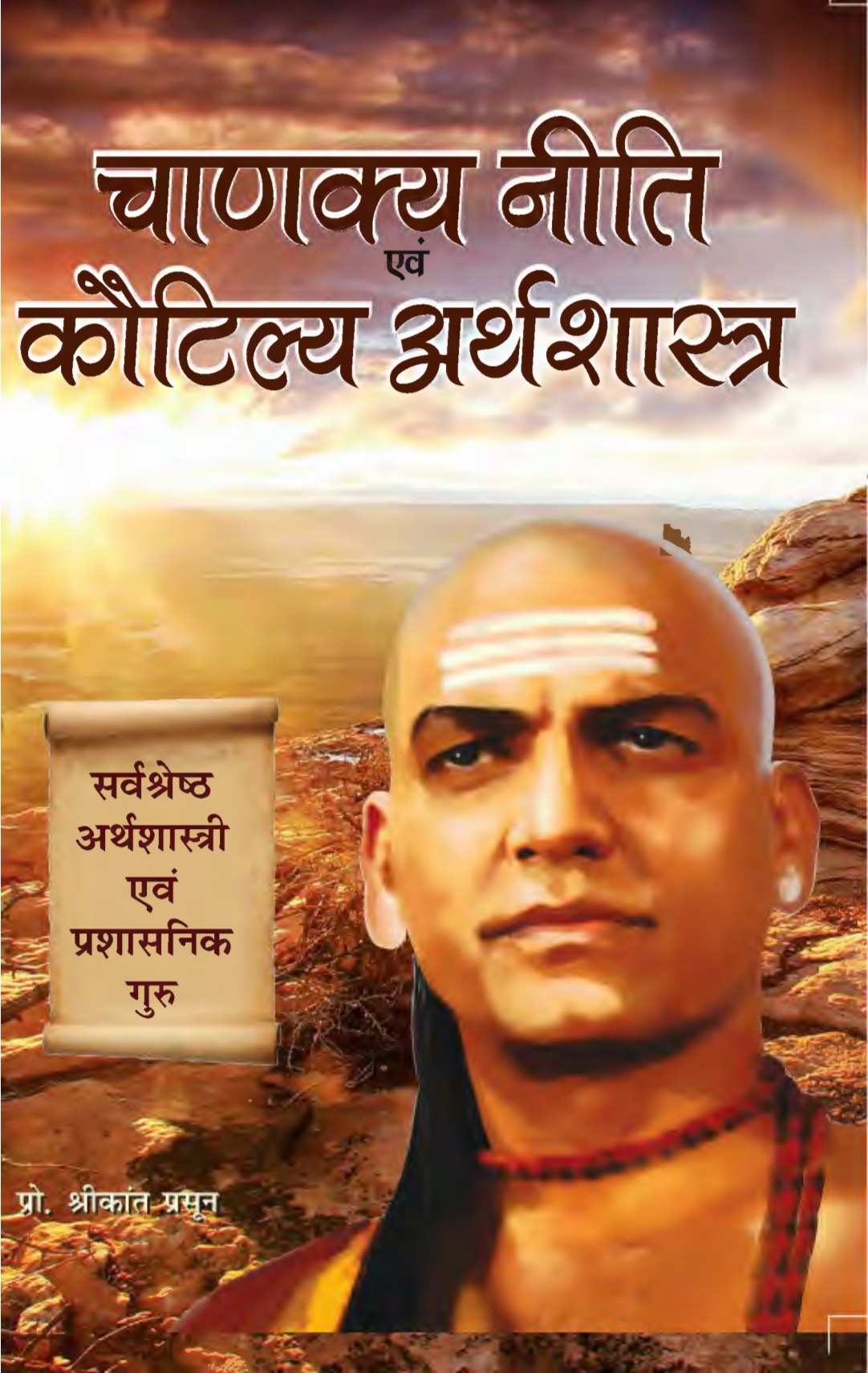

सर्वश्रेष्ठ
अर्थशास्त्री
एवं
प्रशासनिक
गुरु

प्रो. श्रीकांत प्रसून

चाणक्य नीति
एवं
कौटिल्य अर्थशास्त्र

प्रशासन-विधि और शासन-कला

चाणक्य से लें प्रशासन-विधि, बनें सफल शासक
और करें स्वयं से लेकर सब पर शासन

सम्पूर्ण चाणक्य नीति
चाणक्य-सूत्र
कौटिल्य अर्थशास्त्र

सर्वश्रेष्ठ अर्थशास्त्री;
व्यावहारिक प्रशासनिक गुरु;
साम्राज्य विनाशक राष्ट्र-निर्माता
नीतिज्ञ और नीति-निर्धारक;
कुशल निर्देशक और संचालक
व्यूह-भेदक और शत्रु-हन्ता और
प्रचण्ड राजनीतिज्ञ; सर्वत्र सफल चाणक्य से
श्रेष्ठता और शासन हेतु ज्ञान, विज्ञान,
कला और प्रणाली, सीखें।

प्रो. श्रीकान्त प्रसून

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-505735-2-5

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

प्रकाशकीय

हमें अपने पाठकों की सेवा में यह अनमोल कृति *'चाणक्य नीति एवं कौटिल्य अर्थशास्त्र'* भेंट करते हुए अपार हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक ज्ञान एवं शिक्षा का भण्डार है। इसे पढ़कर पाठक अपने दैनिक जीवन के रूप–रंग को बदल सकते हैं। इस पुस्तक में यथासाध्य आधुनिक व्यवस्था के अनुरूप शब्दों एवं विचारों को प्रस्तुत किया गया है। इसे पढ़कर पाठक आसानी से चाणक्य के पथ–निर्देशित विचारों एवं भावों को हृदयंगम कर सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में चाणक्य नीति, चाणक्य सूत्र तथा कौटिल्य अर्थशास्त्र दिया गया है। सभी की विशद व्याख्या सरल हिन्दी में किया गया है। वैसे 'चाणक्य नीति' भारतीय इतिहास की एक अनमोल धरोहर है। इसमें सत्रह अध्याय हैं। 'चाणक्य नीति, महापण्डित चाणक्य द्वारा उनके विशाल एवं विख्यात ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र से उन्हीं के द्वारा अलग किये गये सत्रह अध्यायों पर आधारित ग्रन्थ रचना है। जिसे चाणक्य ने अलग से 'चाणक्य नीति' नाम दिया।

महापण्डित चाणक्य द्वारा विरचित विश्वविख्यात ग्रन्थ कौटिल्य अर्थशास्त्र है। इस ग्रन्थ में वर्णित राज्य सिद्धान्तों के साथ–साथ राज्य प्रबन्ध सम्बन्धी सूक्ष्म तत्त्वों को पिरोया गया है। इस ग्रन्थ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें सिद्धान्त और व्यवहार का, आदर्श और यथार्थ का तथा ज्ञान और क्रिया का सुन्दर समन्वय है।

इस पुस्तक में चाणक्य का जीवन है, उनके जीवन में घटित महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। साथ–ही–साथ उनकी उपलब्धियाँ हैं और जीवन को सुखी एवं सम्पन्न बनाने के उनके विचार हैं, उनके बताये गये मार्ग हैं। शासक बनना, शासक बनाना, सत्ता स्थापित करना, उसे सुदृढ़ बनाना, उसकी समुचित व्यवस्था करना और धन की उत्तरोत्तर वृद्धि करना, सब कुछ भरा पड़ा है।

पुस्तक सरल और सुबोध हिन्दी में प्रस्तुत की गयी है कि प्रत्येक जन साधारण इसे पढ़कर लाभान्वित हो सके। आप जितनी अभिरुचि एवं मनोयोग से इसका अध्ययन करेंगे, उतना ही आपको आनन्द तथा ज्ञान में वृद्धि होगी।

–प्रकाशक

समर्पण

'चाणक्य : प्रशासन–विधि और शासन–कला'
उन लोगों को समर्पित है
जो संकल्प और दृढ़ता से
निरन्तर श्रम और साधना करते हुए
उच्चतम् शिखर पर पहुँचना
और स्थायित्व ग्रहण कर
शिखर पर ही बने रहना चाहते हैं,

और ब्रीज के अपने दो निकटतम
भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रशासकों
श्री अमिताभ वर्मा
और
श्री ए. के. उपाध्याय को।

–प्रो. श्रीकान्त प्रसून

विषय-सूची

भूमिका *9*
चाणक्य की प्रार्थनाएँ *10*
चाणक्य की अमरता *12*

प्रथम खण्ड
दृढ़प्रतिज्ञ, व्यक्ति, जीवन चरित्र

प्रशासन गुरु चाणक्य 17
जीवन, चिन्तन और उपलब्धियाँ 29
बहुमुखी प्रतिभा–सम्पन्न चाणक्य 39
चाणक्य की श्रेष्ठता और दृढ़ता 47
अर्थ और कौटिल्य अर्थशास्त्र 56
चाणक्य की नारी–चेतना 61

दूसरा खण्ड
सुव्यवस्थित व्यक्ति और समाज, सम्पूर्ण चाणक्य नीति

अध्याय एक 73
अध्याय दो 76
अध्याय तीन 79
अध्याय चार 82
अध्याय पाँच 86
अध्याय छः 89
अध्याय सात 92
अध्याय आठ 95
अध्याय नौ 99
अध्याय दस 102
अध्याय ग्यारह 106
अध्याय बारह 109
अध्याय तेरह 113
अध्याय चौदह 116
अध्याय पन्द्रह 119
अध्याय सोलह 122
अध्याय सत्रह 126

तीसरा खण्ड
स्व, समय, साधन सुव्यवस्थित

चाणक्य–सूत्र 131

चौथा खण्ड
व्यवस्था चिन्तन, कौटिल्य अर्थशास्त्र

पहला अधिकरण : विनयाधिकारिक 167
दूसरा अधिकरण : अध्यक्ष प्रचार 174
तीसरा अधिकरण : धर्मस्थीय 185
चौथा अधिकरण : कण्टक शोधन 188
पाँचवाँ अधिकरण : योग–वृत्त 190
छठा अधिकरण : मण्डल योनि 196
सातवाँ अधिकरण : षाड्गुण्य 200
आठवाँ अधिकरण : व्यसनाधिकारिक 211
नौवाँ अधिकरण : अभियास्यत्कर्म 216
दसवाँ अधिकरण : सांगग्रामिक 223
ग्यारहवाँ अधिकरण : संघवृत्त 224
बारहवाँ अधिकरण : आबलीयस 225
तेरहवाँ अधिकरण : दुर्ग–लम्भोपाय 226
चौदहवाँ अधिकरण : औपनिषदिक 229
पन्द्रहवाँ अधिकरण : तन्त्रयुक्ति 230

पाँचवाँ खण्ड
अमरता और निर्वाण
शेष कथ्य

चाणक्य की निरन्तर सक्रियता 235
चाणक्य का प्रयाण और मुक्ति 252

भूमिका

चाणक्य ने तब कुछ नहीं लिखा, जब युवा थे। पहले ऐसी परम्परा भी नहीं थी। प्राप्त या एकत्रित ज्ञान को अनुभव की कसौटी पर जाँच–परख कर ही लिखा जाता था। अमात्य पद से अपने को मुक्त करने के बाद चौथेपन में चाणक्य ने लिखना आरम्भ किया। नीतिशास्त्र लिखा, नीति सूत्र लिखा और अर्थशास्त्र लिखा। बहुत लिखा, सबके लिए लिखा और बहुत अच्छा लिखा। उन सबको आप तक पहुँचा देना इस पुस्तक; 'चाणक्य : प्रशासन–विधि और शासन–कला; स्वयं से लेकर सब पर शासन करना चाणक्य से सीखें'; का उद्देश्य है।

चाणक्य ने एक स्थापित विशाल राष्ट्र को केन्द्र में रखकर लिखा; सबके अस्तित्व की रक्षा और विकास के लिए लिखा, इसलिए यह पुस्तक चिन्तक, लेखक, प्रबन्धक, सेवक, शासक, प्रशासक, राजनीतिज्ञ, राजनयिक, व्यवस्था शिक्षक–प्रशिक्षक व्यवस्था–शिक्षार्थी, सरकारी अधिकारी और सामान्य पाठक सबके लिए है।

इसमें यथासाध्य आधुनिक व्यवस्था के अनुकूल शब्दों और विचारों को लिखा गया है कि आज का पाठक आसानी से समझ ले।

राजकीय व्यवस्था को व्यावसायिक व्यवस्था और प्रशासकीय व्यवस्था के साँचे में ढालकर प्रस्तुत किया गया है कि अन्तःदृष्टि अपने–आप विकसित हो।

इसमें चाणक्य का जीवन है; उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं; उनकी उपलब्धियाँ हैं और जीवन को सुखी और सम्पन्न तथा आनन्दमय बनाने के लिए उनके विचार हैं; उनके बताये गये मार्ग हैं। शासक बनना, शासक बनाना, सत्ता स्थापित करना; उसे विस्तार देना; उसकी समुचित व्यवस्था करना और धन की उत्तरोत्तर वृद्धि करते जाना; सब है।

अब यह पाठकों पर है कि वे कितनी अभिरुचि से इसका अध्ययन करते हैं; कितने मनोयोग से आत्मसात् करते हैं और कितने परिश्रम से इसका उपयोग करते हैं, क्योंकि उनकी प्राप्ति चाणक्य की शिक्षाओं के चैतन्य प्रयोग व उपयोग पर ही निर्भर है।

सबके सर्वांगीण विकास; सम्यक् समृद्धि और अनुपम आनन्द के लिए।

सर्वे शुभे!

–प्रो. श्रीकान्त प्रसून

चाणक्य की प्रार्थनाएँ

प्रणम्य शिरसा विष्णुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम्।
नानाशास्त्र उद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम्।

तीनों लोकों, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और पाताल के स्वामी सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमेश्वर विष्णु को सिर झुकाकर नमन करने के पश्चात् अनेक शास्त्रों से एकत्र किये गये इस राजनीतिक ज्ञान का वर्णन करता हूँ।

❖❖❖

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।
धर्मोपदेश विख्यातं कार्याकार्य शुभाशुभम्।

श्रेष्ठ पुरुष इस शास्त्र का विधिवत् अध्ययन करके धर्मशास्त्रों के करणीय, अकरणीय तथा शुभ या अशुभ फल देने वाले कर्मों को समझ जायेंगे।

❖❖❖

तदहं सम्प्रवक्ष्यामी लोकानां हित-काम्यया।
यस्य विज्ञान मात्रेण सर्वज्ञत्वं प्रपद्यते।

इसलिए मैं मानव के कल्याण की कामना से इस ज्ञान का वर्णन कर रहा हूँ कि जिससे मनुष्य सर्वज्ञ हो जाये।

❖❖❖

नमः शुक्र-बृहस्पतिभ्याम्।

देवों के गुरु बृहस्पति और दानवों के गुरु शुक्राचार्य को प्रणाम करते हुए आचार्य चाणक्य ने अर्थशास्त्र की पुस्तक लिखना आरम्भ किया है कि किस प्रकार धरती में और धरती पर उपलब्ध सम्पदा पर अधिकार किया जाये; किस प्रकार उसमें अनवरत वृद्धि होती रहे; किस प्रकार उसे सुव्यस्थित और सुरक्षित रखा जाये ताकि शासन स्थापित हो; ताकि सुख मिले; ताकि शान्ति रहे; ताकि सम् वृद्धि हो; ताकि अनन्त काल तक सन्तति आनन्द से रहे; ताकि सम्मान और प्रतिष्ठा बनी रहे और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति हो।

❖❖❖

वैदिक प्रार्थनाएँ

अभयं मित्राद् अभयं अमित्राद् अभयं ज्ञाताद् अभयं पुरो यः।
अभयं नक्तं अभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।

हे देव! हमें न मित्र से भय लगे, न शत्रु से!
हमें परिचितों के भय से मुक्त करो!
और सभी चीजों के भय से मुक्त करो!
हम दिन में और रात्रि में भय से मुक्त रहें!
किसी भी देश में भय का नहीं रहे कोई कारण!
हमें हर जगह मित्र और केवल मित्र ही मिलें!

❖❖❖

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।

ओ देव! दयाद्र हृदय दें; सर्वहितैषी कार्य दें!
प्रचुर दानशील शक्ति दें!

❖❖❖

वैश्वानरज्योतिः भूयासम्।

ओ देव! अपने उदार प्रकाश में हमें निमग्न होने दें!

चाणक्य की अमरता

1

धन संचय, सुरक्षा के व्यावहारिक, सांसारिक गुरु चाणक्य का चिन्तन था उत्कृष्ट।
भावपूर्ण सुसंस्कृत शब्द सभी गरिमापूर्ण और भाषा थी परिपक्व तथा संश्लिष्ट।
हम भले हट गये हों दूर अपनी सम्पदा, संस्कृति, ज्ञान–परम्परा, दृढ़ आधार से;
पर चाणक्य के विचार हैं शीर्ष पर रखने वाले, बनाने वाले ज्ञानी प्रशासक बलिष्ट।

2

तक्षशिला का छात्र, अध्यापक, आचार्य, समुन्नत, सिद्ध और प्रसिद्ध।
पहुँचा पाटलिपुत्र; देखता, आँकता, देश; मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध।
अंकेक्षण, विश्लेषण करता, भावी कर्म सुनिश्चित करता आया चाणक्य;
पर घनानन्द से अपमानित, प्रण विनाश का किया होकर अतिशय क्रुद्ध।

3

ऋषि चणक का आचार्य–पुत्र अपमान, अनाचार क्यों सहता?
क्यों रहता वह मौन, शान्त? क्यों न सत्य, शुद्ध ही कहता?
नहीं लोभ, ना लिप्सा कोई, बुझाता क्यों जो लगी आग थी?
क्यों न उखाड़ता सड़े शासन को? क्यों चुप वह रहता?

4

रहा कर्मरत दिवस–रात्रि, चाणक्य को नहीं चैन, आराम।
सिद्ध करना व्रत कठिन था, धुन एक ही, काम ही काम।
सैनिक खोजना, साधन, अस्त्र–शस्त्र बहुल एकत्रित करना;
सुबह होती थी करते–करते, करते–करते नित्य होती शाम।

5

युवा सेना चैतन्य खड़ी कर लिया, दिया प्रशिक्षण ऐसा।
ग्रामीण बालक सम्राट् के अनुरूप ढला, जैसा चाहा वैसा।
बिना बने ही क्रूर, क्रूरता को पलटता अनुपम बुद्धि–बल से।
उखाड़ा चाणक्य ने नन्दवंश को, मिला था जैसे को तैसा।

6

संघर्ष ऐसा किया, युद्ध इतना किया कि योद्धा नहीं समर हो गये।
नीति–पौध से निकलकर बढ़े, फूल, काँटे, गन्ध सब भ्रमर हो गये।
लिया नहीं कुछ, दिया ही सदा बस, पग बचाते, उठाते, बढ़ाते रहे।
असम्भव से कर्मों, विप्लवी विचारों से चाणक्य जयी अमर हो गये।

7

चाणक्य ने नीति उत्तम बनायी; राजनीति और कूटनीति भी।
शीत नीति सी विष भरी और उत्तम चरित्र निर्माण रीति भी।
निर्भयता जन–जन को थी तब कुविचारी को भय ही भय –
शक्ति को पुरजोर जगाया और बढ़ाई अतिशय प्रीति भी।

8

दुबला था चाणक्य पर दुर्बल नहीं, करता गर्जना घनघोर।
गहराई का पता न चलता, न विस्तार का कोई ओर–छोर।
सफलता का यह मूल मन्त्र था : धीरज, स्थिरता व दृढ़ता –
केन्द्रित मन करता संधान, रखता समान दृष्टि चहुँओर।

9

सर्जनाशील विचारक हीनभाव और हीनकर्म की भर्त्सना करता।
चाणक्य विचार कर कहता, करता; सही समय सही पग धरता।
सन्तुलित था चिन्तन, निर्णय गणित–फलित सा; सफल सुरक्षित –
ज्ञानवान, शीलवान, विचारक श्रेष्ठ, क्यों डगमग होता, डरता?

10

होकर स्वतः सेवा–निवृत्त, जुटा लेखन में उत्तम नीतिशास्त्र।
चतुराई कुटिलता से परिपूरित पूर्ण हुआ कौटिल्य अर्थशास्त्र।
फिर अनुभव सूत्र में बँधने लगे कि जीवन कंचन चमके, गमके –
अक्षुण्ण रखा गरिमा को बनकर कुल का दीपक पुत्र सुपात्र।

11

पूर्ण सुरक्षित प्रणाली दे गया चाणक्य अन्तिम प्रयाण के पूर्व।
सरल, सहज, सपाट–सा मार्ग जो देता सफलता अभूतपूर्व।
ना गलती करता ना करने देता, ना योजना होती कमजोर –
लय हो लय में लय बन जिया, यह आश्चर्य, उपलब्धि अपूर्व।

12

चाणक्य आर्य थे, अनार्यों के विरोधी, कर्म के थे समर्थक।
किया एकत्रित ज्ञान, नहीं गँवाया क्षण मात्र भी निरर्थक।
राज्य और समाज के लिए बने, तने, खड़े रहे, या मिटे;
धर्मरतता और कर्मलीनता से अपना जीवन किया सार्थक।

13

संतति को जो दे गये अनुपम, अतुलित, व्यावहारिक ज्ञान।
जिससे हो सके प्रशस्त मार्ग, और हो विकास और उत्थान;
लिखकर, सिखलाया, उपयोग बताया उद्यम में, प्राप्ति में;
ऐसी थी दृढ़ता विचित्र कि सब पूर्ण कर ही किया प्रयाण।

14

ऐसे हैं, इतने हैं, तपे और ऋषि परम्परा में पालित और विकसित।
चाणक्य के भाव हैं, विचार और ज्ञान हैं, जो नहीं होंगे विस्थापित।
देखा, जाना, शाश्वत, मोक्ष कारक, ग्रहण, अनुसरण योग्य जिससे :
स्वयं, स्वतः हो जाती काल पुरुष चाणक्य की अमरता स्थापित।

15

कोई भी प्रशंसा चाणक्य की होगी नहीं यथेष्ट या पूरी।
क्योंकि वह था सम्पूर्ण परिधि, सभी चक्र, बीच की धुरी।
वह था समय के साथ, समय उसके साथ चला सम्भालता;
जो भी अपनाये, करे अनुकरण, ना रहती इच्छाएँ अधूरी।

प्रथम खण्ड

दृढ़प्रतिज्ञ, व्यक्ति, जीवन, चरित्र

प्रशासन-गुरु चाणक्य
जीवन, चिन्तन और उपलब्धियाँ
बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न चाणक्य
चाणक्य की श्रेष्ठता और दृढ़ता
अर्थ और कौटिल्य अर्थशास्त्र
चाणक्य की नारी-चेतना

1

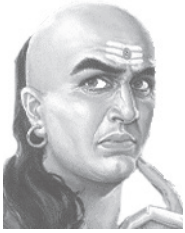

प्रशासन गुरु चाणक्य

परा–अपरा की शक्ति समाहित किये कुछ अधि–चेतना के काल पुरुष धरती पर जनमते हैं, जो ऐसे अतुलित और अनुपम ज्ञान का संचय करते हैं कि वे प्रज्ञा से परिपूर्ण ज्ञान शक्ति और उत्तम बौद्धिकता से अपने काल की ऐतिहासिक धारा को इच्छानुसार परिवर्तित कर देते हैं और राष्ट्र का नव–निर्माण कर नया इतिहास रच देते हैं। ऐसे लोग इतने सक्षम और शक्तिशाली होते हैं कि इनकी इच्छा के अनुसार इतिहास करवट लेता है; घटनाएँ इनकी आज्ञा का अनुपालन करती हैं; व्यक्ति इनके अनुशासन में रहते हैं।

चूँकि ये काल–पुरुष होते हैं; काल के अनुसार चलते हैं, इसलिए काल इनके अनुरूप हो जाता है; फलतः वे शरीर त्याग जाते हैं मगर काल–कवलित नहीं होते। काल उन्हें हृदय से लगाये उष्मायित करता रहता है और वे शताब्दियों पर शताब्दियों तक क्रियाशील रह जाते हैं; अपने समय और समाज को जैसा और जितना सुसंस्कृत और परिष्कृत किये रहते हैं, उससे ज्यादा बड़े समाज को सदा विकसित, उन्नत और उत्कृष्ट बनाते चलते हैं। तब वे कालातीत हो जाते हैं; तब वे मानव मात्र की धरोहर होते हैं; सबके होते हैं और सदा व्यक्ति और समाज से बड़े होते हैं; सन्तति के लिए अमोल होते हैं और सबके भविष्य को सजाते, सँवारते, सुरभित और सुरक्षित करते रहते हैं।

निस्सन्देह चाणक्य वैसे ही कालजयी, यशस्वी, सफल, ज्ञानी, नीतिज्ञ पुरुष थे, जो अपने जीवनकाल में ही ऐतिहासिक हो गये। अतीत और वर्तमान का कोई भी दूसरा व्यक्ति ऐसा नहीं दिखता जो ज्ञान में, बौद्धिकता में, व्यावहारिकता में, चरित्र में, गुण में, सम्मान में, दृढ़ता में, क्रियाशीलता में और क्रियान्वयन में चाणक्य के थोड़ा निकट भी आ पाता हो।

सर्वाधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि चाणक्य सन्त की तरह जिये; ज्ञान के अतिरिक्त अपने लिए कुछ भी एकत्रित नहीं किया; प्रसिद्धि उन्हें सहज और स्वतः मिली; जो कुछ भी उन्होंने किया वह दूसरों के लिए किया; दूसरों के, समाज के, राष्ट्र के, उत्थान, विकास, सुख, समृद्धि, सुरक्षा, ज्ञान, संस्कार और मोक्ष के लिए किया और

उसी व्यक्ति ने सम्पूर्ण भारत को एक शासन के अन्दर लाकर विशाल, धनी, शान्त और सुखद राष्ट्र बना दिया।

चाणक्य ज्ञान–रूप हैं; भाव, विचार हैं और एक अधोवस्त्र, धोती और एक तह किया हुआ चादर कन्धे पर अंग–वस्त्रम् के रूप में रखे हुए हैं, छिले चमकते सिर पर आगे अथवा पीछे खुली मोटी चोटी के रूप में टीक; चौड़ा और रश्मियुक्त ललाट; बड़ी–बड़ी प्रकाशमान आँखें और हाथ में दो पुस्तकों से प्रतीकित हो जाते हैं। ऐसे थे चणक ऋषि के सुपुत्र आचार्य चाणक्य आत्मबल, दृढ़संकल्प से भरे प्रज्ञावान, मतिमान। इसीलिए चाणक्य आज भी एक जीवन्त, क्रियाशील चिन्तक, पथ–प्रदर्शक तेज और बल हैं।

निष्ठावान प्रशासक

चाणक्य न केवल व्यावहारिक चिन्तक थे, बल्कि विचारों को कार्यरूप में परिणत करने के समय शीघ्रता और तीव्र वेग धारण कर लेते थे; न केवल प्रखर और प्रभावशाली वक्ता थे बल्कि अति अड़ियल, बहुत कड़ियल और अटल जिद्दी व्यक्ति थे; शिक्षक थे, गुरु थे; निष्ठावान अमात्य थे; स्वच्छ, निर्मल, कोमल, सहृदय, एकनिष्ठ और दृढ़ प्रशासक थे; सफल व्यूह रचना करने वाले थे; जितने विध्वंसक बल के मालिक थे, उससे कई गुणा ज्यादा सृजनात्मक शक्ति संचित किये हुए थे। जितना चाणक्य बौद्धिक थे, उतना ही भावुक भी; जितना सम्मान देते थे उससे अधिक पाते थे। वे आग्रही थे, दुराग्रही नहीं; नैतिक बल लिए वे कर्म थे, क्रिया थे; इसलिए उन्होंने एक शक्तिशाली राजवंश को समूल नष्ट कर दिया और वैसे अनेक राज्यों को मिलाकर सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरो दिया। विध्वंस जितनी शीघ्रता से किया, सर्जना उससे भी तीव्र हुई क्योंकि वे सर्जना करना विध्वंस से पहले ही आरम्भ कर चुके थे। उनके दृढ़निश्चय को और अन्तर्दृष्टि को पता था कि वही होगा, जो वे करेंगे; कहेंगे; चाहेंगे। ऐसा दृढ़बोध तो कहीं देखा ही नहीं जाता।

चाणक्य जो भी करते थे, सब मानसिक और चारित्रिक शक्ति से करते थे। अतः वे सदा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते थे; न कार्य अधूरा छोड़ते थे, न असफल होते थे, क्योंकि जो भी करते थे सम्पूर्ण शक्ति और मनोयोग से करते थे; अतएव वे पूर्णता के सदा अति निकट रहते थे।

इसका मूल कारण चाणक्य का तक्षशिला का आचार्य या अध्यापक होना नहीं था; वे तो शिक्षणकार्य त्यागकर देश–भ्रमण पर निकल आये थे और सुदूर दक्षिण से घूमकर उत्तरी–पूर्वी छोर पर आ गये थे। जहाँ राजा की अशिष्टता से पूरे नन्दवंश के विनाश का प्रण कर लिया और क्षण भर में ही चाणक्य बदलकर वे सब हो गये जो वर्षों की तपस्या करके भी कोई नहीं होता। एक अपने में ही वे सभी कुछ हो गये, जो–जो होना एक साम्राज्य के विध्वंस और दूसरे की स्थापना के लिए आवश्यक था।

असम्भव–सा प्रण

विध्वंस समाज को बरबाद कर सकता था, किन्तु जिस परिपूरित योजना को बनाकर

चाणक्य क्रियानीवत कर रह थे, उसमें विध्वंस था ही नहीं, निर्माण ही निर्माण था और था बस साम्राज्य परिवर्तन, बस प्रशासन का बदल जाना। प्रत्येक दिशा से और प्रत्येक विभाग में यथासाध्य परिवर्तन करते हुए ही वे केन्द्रीय प्रशासन तक पहुँचे और रात्रि के तीसरे पहर से भोर तक ही सब कुछ बदल गया। यह अन्दाजा करना अब कठिन है कि कितना तीव्र और वेगवान था और कितना वैचारिक और प्रशान्त था वह परिवर्तन! निश्चित रूप से प्रशासकीय पूर्णता का निश्चित परिणाम! प्रसाद गुण से भरपूर! लावण्यमान! दर्शनीय और सराहनीय! परिवर्तन पूरी निष्ठा और तत्परता से किया गया था!

चाणक्य ने यह तब किया, जब वे स्थान और जनसमुदाय को नहीं जानते थे और उस स्थान और जन समुदाय के बीच नहीं पहचाने जाते थे। जब वे अकेले थे, निपट अकेले! न स्थान, न निवास! न अपने न पराये! न धन था, न सेना; न सैनिक, न शस्त्र, न सेनापति। मानसिक बल और जागृत चेतना थी; चारित्रिक शक्ति थी; ज्ञान–गुण था; जिसके सहारे एक ग्रामीण बालक को राजा का प्रशिक्षण दिया और उसी जैसे अन्य को शिक्षा और शस्त्र–संचालन सिखाकर सैनिक और सेनाध्यक्ष बनाया तथा एक असम्भव कार्य को सम्भव बना दिया।

समूल विनाश

चाणक्य ऐसा इसलिए कर सके कि उन्हें शत्रु का समूल विनाश करना ही सिखाया गया था। अगर शत्रु का कुछ भी शेष बचा रह गया, तब कालान्तर में वही शक्तिशाली होकर आपका विनाश कर देगा।

चाणक्य के जीवन की यह बहुत प्रसिद्ध घटना है, जो यह सिद्ध कर देने के लिए यथेष्ट है कि चाणक्य शत्रु को सहन ही नहीं करते थे। वे स्वच्छ और बाधारहित मार्ग चाहते थे। सुरक्षित, शत्रुविहीन और निर्भय रहना ही शान्तिपूर्ण जीवन है। तभी कोई आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर निस्संक आगे बढ़ सकेगा। वे ढहते महल को मटियामेट कर देना चाहते थे कि वहाँ नया महल बनकर चमके, दमके; ताकि परम्परा को आगे बढ़ाने वाला नव–निर्माण हो, नयी सर्जना हो, लाभ और प्रगति दिखलायी पड़े। एक घटना से उनके अन्तस का उद्वेलन और उनकी दृढ़ता स्पष्ट हो जाती है जिसका वर्णन कुछ निम्न प्रकार किया जाता है।

कुश वह पौधा है, जिसकी जड़ मोटी सूई की तरह गहरी चूभती है और कई दिनों तक तीव्र वेदना देती है, किन्तु धार्मिक पूजन आदि में सनातन धर्म वाले उपयोग करते हैं। यह एक संयोग था कि एक दिन एक कुश चाणक्य के पाँव में गड़ गया। कहीं–कहीं यह भी कहा जाता है कि कुश चाणक्य के पिता ऋषि चणक के पाँव में गड़ा और उसी के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। श्राद्ध कर्म चाणक्य ने पूरे किये, किन्तु न वह कुश को भूल सके और न क्षमा कर सके।

कारण जो भी रहा हो चाणक्य ने कुश को उस स्थान से समूल विनाश का

निर्णय ले लिया। प्रतिदिन मट्ठा लेकर वहाँ जाते थे, जड़ से उखाड़ते थे और वह पुनः नये सिर से पनपे नहीं, इसलिए जड़ में मट्ठा डाल देते थे, जो कुश को पनपने नहीं देता है।

यह चाणक्य का अपना तरीका था, अपने आक्रोश को प्रदर्शित करने का और शत्रु से प्रतिशोध लेने का।

देखकर लोग चकित थे कि एक युवा प्रतिदिन नियम से मट्ठा लेकर आता है, कुश उखाड़ता है और जड़ में मट्ठा पटा देता है। कुछ ने इसे पसन्द नहीं किया। कुछ ने प्रतिवाद भी किया, किन्तु चाणक्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। एक दिन कुछ वृद्ध एक मन्त्री के नेतृत्व में वहाँ आये। चाणक्य अपनी नित्य लीला में व्यस्त थे। उनका ध्यान भी नहीं टूटा। मन्त्री ने विनम्र स्वर में पूछा : आप क्या और क्यों कर रहे हैं?

चाणक्य का उत्तर स्पष्ट था : मैं मनुष्य और मनुष्यता के विरुद्ध कुछ भी सहन नहीं कर सकता, इसलिए चूभने वाले इन काँटों का समूल विनाश कर रहा हूँ। जो भी मनुष्य और मनुष्यता के विरुद्ध जायेगा, मैं उसे नष्ट कर दूँगा।

उनकी दीप्ति और दृढ़ता नन्द के उस मन्त्री को भा गयी। वह घनानन्द को पसन्द नहीं करता था और उसे उखाड़ फेंकना चाहता था। किन्तु वह स्वयं सक्षम नहीं था। उसे लगा कि यह व्यक्ति वह महती कार्य कर सकता है। उसने घनानन्द द्वारा आयोजित एक भोज में उन्हें यह जानकर निमन्त्रित किया कि न घनानन्द इन्हें सह पायेगा और न ये घनानन्द को। कुछ हो जायेगा, जो घनानन्द के विनाश का कारण होगा। इस प्रकार चाणक्य घनानन्द के राजमहल में पहुँच गये।

चाणक्य या तो अपनी बात छिपा जाते थे या ऐसी ही स्पष्टता से व्यक्त करते थे। किसी को वे क्षमा नहीं करते थे। छिपा इसलिए लेते थे कि कार्य पूरा होने के पहले बात का खुल जाना प्रतिरोध पैदा करेगा। उन्होंने कहा भी है :

मनसा विचिन्तयेत् वचसा न प्रकाशयेत्।

***व्याख्या :** यह सर्वथा असम्भव–सा लगता है कि बिना शत्रु पैदा किये हुए कोई शिखर पर चढ़ जाये, क्योंकि द्वेष बहुत है और यह भी असम्भव लगता है कि शत्रुओं के रहते कोई शिखर तक चढ़ पाये। इसलिए यह आवश्यक है कि सही समय पर शत्रु का सामना करके उसे नष्ट करते हुए आगे बढ़ें। इसमें अधिक समय, श्रम और ऊर्जा भी नष्ट नहीं होनी चाहिए।*

***प्रभाव :** जड़ जमाये हुए शत्रु शक्तिशाली होते जाते हैं। तब वे ज़्यादा शक्ति से और घृणा से आक्रमण करते हैं। इसलिए जैसे ही अवसर मिले, शत्रु का समूल विनाश कर दें।*

दिवस रात्रि : कर्म ही कर्म

गलतियों के लिए चाणक्य के पास माफ़ी नहीं थी, दण्ड था। दण्ड चाहे कितना भी

छोटा या हलका हो मगर वह किसी को छोड़ते नहीं थे। चाणक्य से भय का यह मुख्य कारण था। दण्ड से अगर बचा जा सकता है, तब गलतियाँ की जा सकती है; अपराध किये जा सकते हैं। किन्तु जब दण्ड से बचने की कोई सम्भावना ही नहीं है, तब गलतियों से बचने की चेष्टा की जाती है और अपराध का ध्यान भी मन में नहीं आने दिया जाता। उनके शिष्य इस बात को लेकर, समझकर और अन्तस् में बैठाकर बड़े हुए, जिसका अनुपम लाभ देश को शताब्दियों तक मिलता रहा। ऐसी ही एक छोटी घटना के साक्षी बने वे ग्रामीण जो चाणक्य के आश्रम के पास से होकर प्रातःकाल जा रहे थे।

अहले भोर में अपने कार्यपर निकलने वाले मछुआरे, धोबी और माली जिन्हें मछलियाँ पकड़ना था या कपड़े धोने थे या फूल तोड़ने थे, वे आश्चर्य में पड़ गये। वे कुछ देखकर एकाएक उस बड़े आम के बाग के किनारे ठिठककर खड़े हो गये। यहीं वह आश्रम था, जिसकी चर्चा वे सुनते और करते थे। बात ही कुछ ऐसी थी। आचार्य चाणक्य जल से भरे दो घड़े कमर पर रखे झील–सी नदी की ओर से आ रहे थे। यह परिपाटी नहीं थी। लकड़ी काटना, जल भरना, सफाई करना शिष्यों के कार्य थे। आचार्य को दैहिक कार्य नहीं करने थे। यही आश्चर्य का कारण था। वे जल ला रहे हैं, मगर क्यों? यह असामान्य प्रश्न था।

तभी कुछ विचित्र घटना घटी कि सब खुलकर, खिल–खिलाकर हँसने लगे। गुरु ने पहले घड़ों को जमीन पर रखा, फिर एक घड़े को उठाकर सोये छात्रों की ओर बढ़े और कुछ बोलते हुए सब पर घड़े से जल डालने लगे। लड़के हड़बड़ा कर उठे और जैसे थे वैसे ही नदी की ओर भागने लगे। किसी का अधोवस्त्र गिरता; किसी का ढीला था; किसी का अंगवस्त्र सोहरता, किसी का गिरता। अफरा–तफरी–सी मच गयी। एक घड़ा जल गिराने के बाद गुरु मुड़े, दूसरा घड़ा उठाया और चले लड़कों पर पटाने। ग्रामीणों की हँसी तेज हो गयी। अब वहाँ कोई था ही नहीं जिस पर जल पटाया जाये। गुरु ने भुनभुनाते हुए ही वापस लौटकर जल को यथास्थान रखा। ग्रामीणों के पास तक केवल क्रोध से भरे गुरु का स्वर आ रहा था, शब्द स्पष्ट नहीं हो रहे थे।

तमाशा खत्म हो गया था। ग्रामीण हँसते हुए, मन में गुरु के लिए प्रशंसा लिये हुए, अपने कार्यस्थल की ओर बढ़े।

***व्याख्या :** अविराम श्रम और किसी कार्य में मनोयोग से लगे रहने पर उन्हें भी सफलता मिलती है, जिनके पास साधनों की कमी होती है और जो शक्तिहीन होते हैं। नियमित कार्य से ही अन्तर पड़ जाता है। लगातार रगड़े जाने पर कोमल रस्सी कड़े पत्थरों पर अपना चिह्न अंकित कर देती है।*

***प्रभाव :** कोई अपने दिन और कार्य के घण्टों को सुबह में जल्दी उठकर और रात्रि में विलम्ब से सोने जाकर बढ़ा सकता है। रात्रि दस बजे से सुबह पाँच बजे तक उसे नींद भी पूरी मिल जाती है। जो विलम्ब से सोने जाते हैं और विलम्ब से ही जगते हैं, वे तरोताजा कभी नहीं रहते।*

आधुनिकता श्रेष्ठता या पतन

चाणक्य आदर और भय दोनों ही उत्पन्न करते हैं, क्योंकि न उनमें लोभ था, न लिप्सा और न किये गये कर्मों का वे प्रतिदान ही चाहते थे। इसलिए निर्भय रहते थे और इसीलिए लोग भय खाते थे। किन्तु आश्चर्य यह है कि चाणक्य सदा निर्भय रहने की शिक्षा देते रहे। मगर निर्भय तो वही रह सकता है, जो किसी भी तरह का अनैतिक आचरण नहीं करता। निर्भय होना है, तब नैतिकता के मार्ग पर ही चलना होगा।

स्पष्ट बात यह है कि जो नीच हैं, उन्हें किसी भी तरह की प्रतिष्ठा के नष्ट होने का कोई खतरा या भय नहीं होता *नास्त्य मानभयं अनार्यस्य*। जो बुद्धिमान और चेतन हैं, उन्हें नौकरी या व्यवसाय में कोई भय नहीं रहता *न चेतनवतां वृत्ति-भयम्*। जिन्हें अपनी ज्ञानेन्द्रियों पर नियन्त्रण है, उन्हें पतन का भय नहीं होता *न जीतेन्द्रियानां विषय-भयम्*। जो ईमानदार और कर्तव्यपरायण होते हैं, उन्हें न किसी व्यक्ति से और न मृत्यु से, किसी से कोई भय नहीं होता *न कृतार्थानां मरणं-भयम्*।

अगर ऐसे लोग हों और ऐसा भयमुक्त समाज हो, तब सभी निर्भय होकर जी सकेंगे और दुष्ट तथा अपराधी दबकर जीयेंगे, दिनदाड़े भीड़ भरे स्थानों पर बम नहीं फोड़ेंगे। तब न बलात्कार होगा और न स्त्रियों का नग्न प्रदर्शन होगा; न घोटाले होंगे, न बैंक डकैतियाँ होंगी और न हत्याएँ होंगी, न दुर्घटनाएँ, और न असमय मृत्यु।

गरीब, दीन, दुखियों के अतिरिक्त किसी के लिए चाणक्य के मन में दया नहीं थी। वे काम लेना जानते थे। वे अनुशासन चाहते थे और अनुशासन भंग करने वाले उनसे भय खाते थे। बिना रखे हुए ही यह स्पष्ट है कि शिक्षक की छड़ी प्रतीक रूप में सदा उनके हाथ में रहती थी जिसका वे भरपूर उपयोग करते थे। उनकी छड़ी जोर से पड़ती थी। घायल न भी करे तब भी दर्द बहुत देर तक रहता था।

आज के परिदृश्य में छात्रों को अकारण और बेतुके दण्ड दिये जाते हैं और शिक्षकों पर मुकदमे भी होते रहते हैं। यह अधोगति विगत तीस वर्षों की है। उसके पूर्व ऐसा पतन सुनने में भी नहीं आता था। आज आचरणहीन ही शक्तिशाली हैं और सबको आचरणहीन बना देने के लिए कटिबद्ध हैं कि कोई उन्हें नकटा कहकर अँगुली न उठाये। जेलों में जो पंचसितारा सुविधाएँ उन्हें मिल जाती हैं और अब पत्नियों से भी अलग कमरों में कैदियों के मिलने की कवायद चल रही है, तब सुखभोगी लोग अपराधी बनकर जेल में ही क्यों न रहें? अब जेल से भी भय नहीं लगता। एक श्लोक में चाणक्य ने लिखा है कि उस देश में नहीं रहना चाहिए, जिसमें आतंक हो या आतंकी खतरे हों। आज सभी जगह आतंक और आतंकवादी हैं और सभी इसी भय में जीने के लिए मजबूर हैं। निर्भयता नहीं है, तब भी नहीं जबकि ए श्रेणी से जेड श्रेणी तक की सुरक्षा है।

पहले आग चूल्हों से लगती थी और कुछ झोंपड़ियाँ राख हो जाती थीं। अब आग बिजली से लगती है और दर्जनों दमकलों के बावजूद सैकड़ों लोग मरते हैं, और करोड़ों की सम्पति स्वाहा होती है। प्रतिदिन केवल दिल्ली में पहले सड़क हादसों में दो व्यक्ति

मरते थे अब पाँच मरने लगे हैं। बड़ी प्रगति की है आधुनिकता ने। आज कोई सुरक्षित स्थान नहीं है और कोई जगह भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं है। अपवादों को छोड़कर सभी भ्रष्ट हो गये हैं और केवल रुपयों के लिए किसी भी तरह का जघन्य अपराध कर सकते हैं। स्वाधीनता के बाद से बड़ी प्रगति की है हमने। इतनी कि स्वाधीनता के समय कोई कर्ज न देश पर था न व्यक्ति पर। आज केवल देश का कर्ज कहता है कि एक सौ बीस करोड़ भारतीयों पर तैंतीस–तैंतीस हजार का कर्ज है जो दस नील से अधिक होता है, किन्तु अब हम करोड़ से आगे की गिनती भूल गये हैं। जो कहा है करोड़ में ही कहना है।

और, सबसे अधिक विकसित देश अमेरिका की स्थिति यह है कि उसे प्रतिवर्ष लिये गये कर्ज के वार्षिक ब्याज के रूप में एक सौ बानबे बिलियन डॉलर देने पड़ते हैं। वाह री प्रगति!

आज शिक्षा जगत् हो या कोई अन्य क्षेत्र, उसका वर्णन करना ही व्यर्थ है, समय और श्रम का अपव्यय है क्योंकि जैसी अराजकता है, वैसी भारतीय स्वतन्त्रता के पहले या बाद में कल्पना में भी नहीं थी। एक तरफ कई परीक्षाओं को मिलाकर छात्रों की संख्या बढ़ाई जा रही है कि एक साथ परीक्षा हो और दूसरी ओर प्रत्येक परीक्षा में दस हजार से चालीस हजार तक परीक्षार्थियों की परीक्षा छूट जाती है। शायद ही कोई परीक्षा हो, जिसमें प्रश्न–पत्र की जानकारी की सूचना नहीं मिलती। नामांकन की स्थिति यह है कि निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा वाले देश में शिशु वर्ग में नामांकन के लिए कतारें लगतीं हैं; ऊँचे दामों पर प्रपत्र मिलते हैं और नामांकन के लिए शुल्क के अतिरिक्त लाखों में दान या उपदान देना पड़ता है। अधिकांश महाविद्यालय शिक्षण के नहीं, परीक्षा के केन्द्र होकर रह गये हैं। नामांकन, परीक्षा प्रपत्र भरना, परीक्षा और प्रवेशपत्र तथा प्रमाण–पत्र वितरण, यही कार्य है। इसका क्या वर्णन किया जाये और वर्णन की आवश्यकता ही क्या है, जब सभी लोग इन तथ्यों को जानते हैं?

निर्णय उन लोगों को करना है, जिन्हें इन सारी चीजों में कोई अभिरुचि नहीं है। उन्हें केवल पैसे चाहिए चाहे जैसे मिले। किसी से पूछिये जीवन में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण क्या है? कोई कहेगा 'धन'; कोई 'मकान'; कोई 'पत्नी–प्रेमिका' और कोई 'कार'। सामान्य और सच्चा उत्तर कोई नहीं जानता, नहीं सोचता कि जीवन में सर्वाधिक महत्त्व 'जीवन' का है। प्राण के निकलते ही अपने सगे, पिता, पुत्र, भाई, बन्धु चिता पर लाद श्मशान में फूँक आयेंगे या कब्रिस्तान में गाड़ आयेंगे, तब धन, मकान, पत्नी, कार या विलासिता के सामान किस काम आयेंगे। जब से जीव है, मानव–सृष्टि है, तब से बुढ़ापा है, मृत्यु निश्चित है। उसे टाला नहीं जा सकता, किन्तु अमरता के लिए और सदा जवान रहकर विलासिता करने के लिए सभी परेशान हैं और आसानी से झूठ बोलकर कमाने वाले के हाथों ठगे जाते हैं। वस्तुतः सभी अपने को ठग रहे हैं। जानकर भी कोई सत्य नहीं स्वीकारता। कराह कर, छटपटाकर जी रहे हैं; घुटन में तड़प रहे हैं; हत्याएँ, आत्महत्याएँ कर रहे हैं मगर शान्ति से, सुख से, सन्तोष से स्वस्थ और आनन्द भरा जीवन नहीं जी रहे हैं।

ज्ञानबली चाणक्य

चाणक्य के पास धन का बल नहीं था; शस्त्र बल भी नहीं था, न सैनिकों की शक्ति थी। उनके पास केवल ज्ञान का बल था।

ऐसा ही कोई व्यक्ति ज्ञान के बल को पहचान सकता है; और पूरी शक्ति से उद्घोषणा कर सकता है : ***बुद्धिः यस्य बलं तस्य; निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्***। जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है; बुद्धिहीन को कहाँ का बल! ऐसा ही कोई व्यक्ति प्रशासन का, प्रशासकों का, शासकीय गुरु हो सकता है; और जिसे श्रेष्ठ प्रशासन देकर उच्चासन पर विराजमान होना है और एक लम्बे काल तक उसी उच्चतम् अवस्था में बने रहना है, वह इसी गुरु से मन्त्र लेकर; दीक्षित होकर सभी इच्छाएँ पूर्ण कर सकता है।

नन्द के राजप्रासाद में घटने वाली एक नन्ही–सी घटना ने चाणक्य को ऐसा प्रेरित और उत्प्रेरित किया कि उन्होंने भारत के इतिहास को बदल दिया और लोगों के विचारों को शताब्दियों से उद्वेलित करते और बदलते आ रहे हैं।

प्रण

चाणक्य से सम्बन्धित घटनाओं को कई रूपों में कहा जाता है। कहनेवालों ने तथ्यों के साथ अपनी कल्पना का भी समिश्रण किया है ताकि उनका दर्शन, उनके कार्य और उनकी वाणी वही प्रभाव उत्पन्न कर सके, जिसके लिए वे जाने जाते हैं। चाणक्य ने प्रण कब और कैसे किया, इसे सबसे अधिक रूपों में कहा जाता है। स्वयं से आये हों या किसी अमात्य ने निमन्त्रण दिया हो, किन्तु यह सर्व–विदित बात है कि एक दिन चाणक्य मगध नरेश घनानन्द के दरबार में आये। सर्वाधिक चर्चा इस बात की है कि एक भोज में आने के लिए जानबूझकर एक मन्त्री ने चाणक्य को निमन्त्रित किया था।

यह कहना कठिन है कि वह दिन काला अन्धकारमय था या प्रकाश से परिपूर्ण। शायद राजवंश के लिए काला, किन्तु भारतीय जन–समुदाय के लिए प्रकाशमान।

भोज में सम्मिलित काले ब्राह्मण को देखकर पहले तो घनानन्द हँसा : अरे! क्या यह ब्राह्मण है? ब्राह्मण है तब काला नहीं हो सकता और काला है, तब ब्राह्मण नहीं हो सकता।

चाणक्य ने इस उपहास को अच्छा नहीं माना। फलतः प्रतिवाद किया, किन्तु उसने जैसे सुना ही नहीं। मन्त्री जैसा सोच रहा था, वैसा ही हो रहा था, अतएव वह प्रसन्न था। उसने राजा का पक्ष लिया, जिससे चाणक्य क्रोधित हो गया। स्थिति तनावपूर्ण हो गयी। कई अन्य भी ब्राह्मण के अपमान को अच्छा नहीं मान रहे थे, किन्तु वे चुप थे। मगर चाणक्य चुप नहीं था। राजा अपने अहं में था, वह क्यों कुछ सुनता या चुप रहता? वह ब्राह्मण पर हँसता रहा। ब्राह्मण का धैर्य अपनी सीमा को तोड़कर बहने के लिए आतुर था।

फिर घनानन्द बिफर गया और उसे दरबार से उठाकर बाहर फेंक देने का आदेश दिया। इसने ब्राह्मण के धैर्य को समाप्त कर दिया। चाणक्य क्रोध में आपे से बाहर हो गये। उन्होंने राजा और राज्य पर शाब्दिक शापों की वर्षा कर दी। उन दोनों में से किसी को भी रोकने वाला वहाँ कोई नहीं था। गुस्से में घनानन्द जितना चाणक्य को घायल कर रहा था, चाणक्य का क्रोध उसी अनुपात में बढ़ता जाता था। सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। यह असह्य था। उनके बन्धन से अपने को छुड़ाकर चाणक्य ने अपनी मोटी चोटी खोल दी और गर्जना के स्वर में बोला :

''घनानन्द! मैं तुम्हें सन्मार्ग दिखाने आया था और विलासिता के मार्ग से हटाने आया था ताकि तुम सुरा और सुन्दरियों से मुक्त हो सको। ऐसा नहीं हुआ। तुम विवेक की वाणी न सुन सके। तुमने मुझे अपमानित किया। इस भरे दरबार में सबके सम्मुख मैं यह प्रण करता हूँ कि तुम्हें और तुम्हारे वंश का मैं समूल विनाश कर दूँगा। जबतक तुम नष्ट नहीं हो जाते, तब तक मैं चैन की साँस नहीं लूँगा। जब तक तुम्हें समूल उखाड़ नहीं देता, तब तक मैं अपनी चोटी नहीं बाँधूगा।''

क्रोध के उसी आवेश में चाणक्य दरबार से बाहर निकल गये। सब ठगे–से रह गये।

चाणक्य ने कालान्तर में अपना प्रण पूरा किया।

***व्याख्या :** कोई प्रण न करें या कोई शपथ न लें, किन्तु अगर प्रण ले ही लिया, तब अपनी सारी शक्ति लगाकर उसे पूरा करें। वैसी स्थिति में अपनी सारी ऊर्जा और सारा ज्ञान उसे पूर्ण करने में लगा दें ताकि आपका प्रण पूरा हो, आप आदर के पात्र बनें। असफल होकर तो उपहास्पद हो जायेंगे। विजय आत्मबल भी विकसित करेगी और परम आनन्द भी देगी।*

***प्रभाव :** हम अन्दर से विकसित होते हैं। हमारे अंग भी अन्दर से निकलते हैं। ज्ञान अन्तस् में बढ़ता है और विचार वहीं पनपते और रहते हैं। अन्तःकरण शुद्ध और सम्पूर्ण ऊर्जा है। ऊर्जावान बनें ताकि तत्क्षण और पूरी सफलता मिले।*

ऐसा करके चाणक्य स्वयं एक ऊँचे पहाड़ सदृश हो गये, जिसे पार नहीं किया जा सकता; एक गहरा सागर हो गये, जिसे मापा नहीं जा सकता; एक प्रवाहमान आँधी हो गये, जिसे रोका नहीं जा सकता; एक विशुद्ध मानव हो गये, जिसे जीता नहीं जा सकता। चाणक्य शाल वृक्ष से बड़े हैं; एक गुफा–सा सुरक्षित हैं और किरणों–सा प्रकाशमान हैं और पथ प्रकाशित रखने वाले और प्रशस्त करने वाले हैं।

चाणक्य से भय भी किया जाता है और उनकी आराधना भी की जाती है, क्योंकि वे ही एकमात्र ज्ञानी व्यक्ति हैं, जो शीतल सरिता भी है और दहकती ज्वालामुखी, जिनकी शिक्षाओं को जानने और अनुकरण करने पर; तद्नुसार आचरण करने पर कुछ भी ऐसा नहीं बचता, जिसकी उपलब्धि नहीं हो सकती है।